

वेलेँटाइन दिवस के बारे में शैख इब्ने

उसैमीन रहिमहुल्लाह का फत्वा

﴿ فتوى الشيخ ابن العثيمين رحمه الله عن عيد الحب ﴾

[हिन्दी - Hindi - هندی]

मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन

अनुवाद: अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2010 - 1431

islamhouse.com

﴿ فتوى الشيخ ابن العثيمين رحمه الله عن عيد الحب ﴾

« باللغة الهندية »

محمد بن صالح العثيمين

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2010 - 1431

islamhouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

वेलेंटाइन दिवस के बारे में शैख इब्ने

उसैमीन रहिमहुल्लाह का फत्वा

शैख इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह से प्रश्न किया गया जिस का अंश यह है कि :

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

आदरणीय शैख मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन हफिज़हुल्लाह

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहु , व बाद:

पिछले दिनों में वेलेंटाइन दिवस का जश्न मनाना - विशेष कर छात्राओं के बीच – बहुत प्रचलित हो गया है, और वह ईसाईयों का एक त्योहार है जिस में सम्पूर्ण वर्दी जूते और कपड़े सहित लाल रंग में होती है, और वे (छात्रायें) लाल रंग के फूलों का आदान प्रदान करती हैं..

हम आप से आशा करते हैं कि इस तरह के त्योहारों को मनाने का हुक्म बतलायें, तथा इस तरह के मामलों में आप मुसलमानों को क्या सुझाव और सलाह देंगे ?

अल्लाह आप की रक्षा करे और आप को आशीर्वाद दे।

तो उन्होंने ने जवाब दिया :

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहु

कई कारणों के आधार पर वेलेंटाइन दिवस मनाना जाइज़ नहीं है :

पहला कारण : यह एक नव अविष्कारित त्योहार है जिस का इस्लामी धर्म शास्त्र में कोई आधार नहीं है।

दूसरा : यह प्रेम और इश्क को बढ़ावा देता है।

तसीरा : यह इस तरह की तुच्छ चीजों में दिल के व्यस्त होने का कारण बनता है जो की सलफ सालिहीन (सदाचारी पूर्वजों) रज़ियल्लाहु अन्हुम के तरीके के विरुद्ध है।

अतः इस दिन त्योहार के प्रतीकों में से कोई भी चीज़ करना जाइज़ नहीं है चाहे वह भोजन में हो, या पेय में हो, या पहनावे में हो, या उपहार के आदान प्रदान में हो, या इन के अलावा किसी अन्य चीज़ में हो।

तथा मुसलमान को चाहिए कि वह अपने धर्म पर गर्व करने वाला हो, उसे किसी का अधीनस्थ नहीं होना चाहिए कि हर कांव कांव करने वाले के पीछे भागता

फिरे। मैं अल्लाह तआला से प्रश्न करता हूँ कि वह मुसलमानों को हर दृश्य और अदृश्य फितने (प्रलोभन और उपद्रव) से सुरक्षित रखे, और अपनी तौफ़ीक़ (शक्ति) से हमारी रक्षा करे।"

इसे मुहम्मद सालेह अल-उसैमीन ने ५/११/१४२० हिज़्री को लिखा है। (हस्ताक्षर)

(शैख़ इब्ने उसैमीन का फतावा संग्रह पृ.१६/१९९)